

Q.40 → अब्राहम लिंकन के सिद्धांत पर व्याकरण डालें।
उत्तर → (अमेरिका के 16वें राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन का जन्म 12 फरवरी

1809 ई में केंटकी में हुआ था परिक्षण और शिक्षा के साथ-साथ लिंकन देश की समस्याओं पर भी विचार किया करते थे। लिंकन 8 साल तक विद्यालय के लक्ष्य रहे। लिंकन ने 1847 से 1869 ई तक काँग्रेस के निम्न सदन के लक्ष्य के रूप में कार्य किया। अमेरिकी जनता के सामने अपने निम्न सिद्धांत रखे:-

① अब्राहम लिंकन का मानना था, कि सभी मनुष्य समान हैं और उनके अधिकार भी समान होनी चाहिए।

② अब्राहम लिंकन देश में न्याय तथा स्वतंत्रता के प्रबल समर्थक थे। उनके अनुसार स्वतंत्रता जनता के लिए, जनता के द्वारा जनता का शासन था।

③ वह देश में सभी वर्गों को समुचित उन्नति का अवसर देने के पक्ष में थे।

④ उनके जीवन के दो प्रमुख उद्देश्य संयुक्त राज्य की रक्षा और दासों की मुक्ति थे।

⑤ लिंकन ने अमेरिकी नागरिकों से कहा कि संधि-संविधान से पुराना है। कोई भी राज्य अपनी ओर से संधि को नहीं छोड़ सकता है यदि उसने ऐसा किया तो यह हानिकारी गतिविधियाँ मानी जायेंगी अतः उसके विरुद्ध कठोर कार्यवाही की जायेगी।

⑥ लिंकन का मानना था, कि अपनी स्वतंत्रता और एवं संस्थाओं की रक्षा करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है जिसे उसको निभाना चाहिए।

⑦ लिंकन सत्य के प्रबल समर्थक थे।

जब अब्राहम लिंकन अमेरिका के राष्ट्रपति बन गए उस समय अमेरिका गृह-युद्ध की कगार पर खड़ा था देश में चारों तरफ अशांति व असुरक्षा का महौल था उत्तरी और दक्षिणी राज्यों में युद्ध का मन बना हुआ था दोनों की आपसी झूट के कारण राष्ट्र के कई हिस्सों में खलने के बिना बन गए लिंकन के राष्ट्रपति निर्वाचित होते ही दक्षिण के सात राज्यों ने संधि से अलग हो संयुक्त राज्य की लागत

(1) 3 करोड़ डॉलर की संपत्ति पर कपरा अधिभार कर लिया संधि वाहिरादन व मैफरसन के समय युद्ध था अब वह अलग अलग हो गया लिंकन के समय अमेरिका में दास प्रथा खत्म हो गई, क्योंकि अमेरिका में गृह-युद्ध के कारण दास प्रथा ही का दासों के प्रति उनके मालिकों का आमतौर पर व्यवहार अर्थात् शर्मनाक था देश में कालों की संख्या 22 लाख थी।

देश-गोरे व काले दो भागों में बंट गया था। देश में तुलना की स्थिति कालों के बीचों बीच। उन्हें शारिरीक कष्ट को झेलना पड़ा था इच्छाशुद्धि कही भी वैच-दिना-म-सकता था। इस दास-प्रथा को दक्षिणी राज्य-उपग्रह मानते थे लेकिन उत्तरी राज्य जैसे अमेरिका के लिए अभिशाप समझते थे। अब वे इसकी समाप्ति करना चाहते थे। दासों की स्थिति के ऊपर दोनों संघर्ष कर संघ में विरोध उत्पन्न हो गया। दोनों एक-दूसरे पर आरोप-प्रचारोपचार करने लगे। इन दोनों पक्षों में कोई भी बुराई को तैयार नहीं था। अतः अमेरिका में कुछ की स्थिति बन गई थी।

लिंगन के राष्ट्रपति बनते ही अमेरिका के दक्षिण राज्य संघ से अपना नाता तोड़-लिमा यह घोषणा उन्होंने पहले ही कर रखी थी, क्योंकि वे समझते थे कि लिंगन-उत्तरी राज्यों का समर्थक है जो दास-विरोधी है। अपने की अला कार्रवाई के पक्ष में कई बड़े प्रयत्न किये। तत्पश्चात् दक्षिण के साथ राज्यों को संघ से अलग होकर अपनी नई सरकार का गठन करना पड़ा। अमेरिका में इस कार्य को विद्रोही माना गया। अतः जैसे तबानों के लिए-लिंगन को महत्वपूर्ण कदम उठाने पड़े।

अब यह स्पष्ट कहा जा सकता है कि लिंगन के राष्ट्रपति पद ग्रहण करनेसमय अमेरिका की आर्थिक स्थिति लिंगन के लिए सुगौली भी थी जिसका लिंगन के आर्थिक-साधन-साधन-साधन व इसका समाधान-किमान

समाप्त